समकालीन

तीसरी दुनिया

मार्च 2021
इस अंक का मूल्य
₹ 160.00 (भारत में)
रु. 200.00 (नेपाल में)

महाशक्तियों के प्रभुत्ववाद के खिलाफ तीसरी दुनिया के प्रतिरोध का मुखपत्र

प्रगतिवादी नेपाली साहित्य विशेषांक

• कविताएं • कहानियां • नाटक • साक्षात्कार • संस्मरण

समकालीन नेपाली प्रगतिवादी साहित्य पर संक्षिप्त चर्चा

राजतंत्र से गणराज्य तक: घटनाक्रम

सेतु प्रकाशन से प्रकाशित पुस्तकें

आलोचना और संवाद

- ☐ **सभ्यता की यात्रा अँधेरे में :** अमिताभ राय (PB 135)
- ☐ **माओ त्सेतुङ :** मदन कश्यप (PB 170)
- ☐ **पत्रकारिता का अंधा युग :** आनंद स्वरूप वर्मा (PB 280)
- ☐ **युगचारण दिनकर :** सावित्री सिन्हा (HB 565, PB 290)
- ☐ **उपस्थिति का अर्थ :** ज्ञानरंजन (HB 440, PB 200)
- ☐ **वह हँसी बहुत कुछ कहती थी :** राजेश जोशी (HB 370, PB 160)
- ☐ **हजारीप्रसाद द्विवेदी : एक जगतिक आचार्य :** सम्पादक श्रीप्रकाश शुक्ल (HB 1100, PB 410)
- ☐ **रंगपट : पारम्परिक लोकदृश्य-काव्य-1 :** सम्पादक आभा गुप्ता ठाकुर (HB 750, PB 300)
- ☐ **रंगपट : कविता का रंगमंच :** सम्पादक आभा गुप्ता ठाकुर (HB 700, PB 300)
- ☐ **यह प्रेमचंद हैं :** अपूर्वानंद (HB 925, PB 399)
- ☐ **कविता का घनत्व :** जितेन्द्र श्रीवास्तव (HB 750, PB 300)
- ☐ **वह छन्द की आवृत्ति-सा :** ध्रुव शुक्ल (PB 150)
- ☐ **हिन्दी भाषा और संसार :** उदयन वाजपेयी (PB 140)
- ☐ **रचनाशील नागरिक का आत्मसंघर्ष : कृष्णा सोबती से संवाद :** गिरधर राठी (HB 220, PB 125)
- ☐ **पारसी थियेटर :** रणवीर सिंह (HB 499, PB 200)
- ☐ **भरतीय मानस का वि-औपनिवेशीकरण :** अम्बिकादत्त शर्मा (HB 225, PB 115)
- ☐ **पूर्णता की साधना :** एम. हिरियन्ना, अनु. नन्दकिशोर आचार्य (HB 300, PB 150)
- ☐ **सत्ता और व्यक्ति :** बर्ट्रेण्ड रसेल, अनु. नन्दकिशोर आचार्य (HB 210, PB 110)
- ☐ **विचार के वातायन :** सम्पादक विनोद तिवारी (HB 580, PB 230)

Mode of payments : A/C Payee Drafts/Multicity chaeques drawn in favour of SETU PRAKASHAN PVT.LTD. payable at par at NEW DELHI.
Account details for payment through NEFT:
Account Name : SETU PRAKASHAN PVT. LTD.
A/C No. : 172402000001088 **IFSC :** IOBA0001724
Bank : Indian Overseas Bank, Vasundhara Enclave, New Delhi-110096

कॉरपोरेट ऑफिस : सी-21, सेक्टर-65, नोएडा

(उत्तर प्रदेश) 201301

Web : www.setuprakashan.com **Email :** setuprakashan@gmail.com
Ph. 0120-4177253 **M.** 8130745954

समकालीन
तीसरी दुनिया

प्रगतिवादी नेपाली साहित्य विशेषांक

2021

प्रधान संपादक
आनन्द स्वरूप वर्मा
कला संपादक
बिभास दास
कला संयोजन
प्रमोद शर्मा

इस अंक का संपादन
नरेश ज्ञवाली

अनुवाद मण्डल
प्रकाश उपाध्याय,
इस्माली तथा नरेश ज्ञवाली

सलाहकार मंडल
निनु चापागाई
खगेन्द्र संग्रौला
हरिगोविन्द लुइटेल
इस्माली
मणि काफ्ले

दो शब्द : 5
संपादकीय : 7
कविताएं
पागल/लक्ष्मी प्रसाद देवकोटा 10; मां का सपना/गोपाल प्रसाद रिमाल 13; रक्त क्रांति/युद्ध प्रसाद मिश्र 14; हो ची मिन्ह के नाम पत्र/भूपि शेरचन 15; मोमबत्ती की शिखा/भूपि शेरचन 16; मानुषी/पारिजात 17; मृत्यु/पारिजात 18; नेपाली बहादुर/मोदनाथ प्रश्रित 19; भद्रगोल जेल की खिड़की से/मोहन बिक्रम सिंह 22; श्रम और शिल्प/रामचन्द्र भट्टराई 24; हत्या तंत्र/विमल निभा 25; इच्छा/विमल निभा 26; मुर्गी को बांग नहीं लगाना चाहिए/कुंता शर्मा 28; जीने की आकांक्षा/बुद्ध सायमी 29; लावारिस युद्ध का नतीजा/पूर्णविराम 30; कबूतर और चील/विक्रम सुब्बा 30; अखरोट/विक्रम सुब्बा 31; प्रतिबंध/कृष्ण सेन 'इच्छुक' 31; फिलिस्तीनी/कृष्ण सेन 'इच्छुक' 32; जनता का आदमी/पदम गौतम 34; हाई अलर्ट का निर्देश/दिल साहनी 34; खुजली/श्यामल 35; मोमबत्ती नहीं हैं सम्राट/ अमर गिरी 36; पत्थर/बूंद राणा 36; अस्तित्व चिन्तन/गोविंद वर्तमान 37; प्रतीक्षा/महेश मास्के 38; गेहुंआ अफ्रीका/आहुति 40; तुच्छ जीवन की महान गाथा/आहुति 41; बिसे नगर्ची का बयान/श्रवण मुकारुंग 42; काली और कुत्ता/ईश्वरचंद ज्ञवाली 44; मां/मंजुल 45; थैला/स्नेह सायमि 46; सहानुभूति के स्वर/राम कार्की 'पार्थ' 47; भूख का जुलूस/शकुन्तला जोशी 48; मां तुम्हारा नाम क्या है/लक्ष्मी माली 49; घटवार/भुपाल राई 50; प्रजातंत्र/मित्रलाल पंज्ञानी 51; गणतंत्र/रोशन जनकपुरी 52; पानी की निःशब्द ध्वनि/पूर्ण वैद्य 52; बिंब-प्रतिबिंब/ विष्णु भंडारी : 53, दिल रेशम की चुनरी तो नहीं/धीरेन्द्र प्रेमर्षि 53; गमाली/मणि थापा 54; भग्नावशेष/राजकुमार केसी 55; जिन्दगी मुझे चाहिए/जसराज किराती 56; किस सुंदरी को पहला बनाएं/सीमा शर्मा 57; ईमान की खोज/बासुदेव अधिकारी 58; सिंह दरबार जहां मंडरा रहे हैं गिद्ध/लीखत पांडे 59; दस गजा के इस ओर/आर एम डंगोल 60; मैं कभी नहीं मरूंगा/यज्ञबहादुर डांगी 61; उसकी अभिलाषा में/मुरारी पराजुली 62; आग धधक रही है मनसरा/निभा शाह 63; बाज-चिड़ियां/प्रोल्लास सिंधुलीय 64; आप सीसी टीवी की निगरानी में हैं/विनोद विक्रम केसी 65; डेन्जर जोन/विनोद विक्रम केसी 66; हथियार/अभय श्रेष्ठ 67; चारु मजुमदार/केशव सिलवाल 68; म्यूजियम/यूमा 69; पूर्व छापामार/स्वप्निल स्मृति 70; वायुमंडल का पेटेण्ट/संगीत श्रोता 71; ओ गूगल/मणि काफ्ले 72; मैं और केंटोनमेंट/खगेन्द्र राणा 73; नदियां इंसानों जैसी नहीं होती/भूपिन व्याकुल 75; कहां हूं मैं?/सुरेश किरण 76; पीकदान पैखाना/सरिता तिवारी 76; कुम्भकर्ण उर्फ फक्तांगलुंग/चन्द्रवीर तुम्वापो 77; एक दास का घोषणापत्र/राजु स्यांगतान 79; दार्जिलिंग/विजय सुब्बा 78.

संपादकीय संपर्क:
क्यू-63, सेक्टर-12, नोएडा (गौतम बुद्ध नगर) पिन: 201301
फोन: 0120-4356504/9810720714
ई मेल : teesaridunia@yahoo.com

इस अंक का मूल्य
160/- रुपये

कहानियां
बारूद के धुएं में गुरास के फूल/रमेश विकल 82; ऐसे एक नाम कटता है/पारिजात 87; हरे राम की मां/खगेन्द्र संग्रौला 91; छावनी/हरिहर खनाल 95; ठेकेदारी/नारायण ढकाल 100; बेटे से मुलाकात/घनश्याम ढकाल 105; नये नेपाल का गीत/प्रदीप नेपाल 111; जन इच्छा/इस्माली 115; इस्तीफा/हरिगोविंद लुईंटेल 119; सूरज उगने से पहले/मातृका पोखरेल 122; बेटी/हरिमाया भेटवाल 126; कलुषित मदद/गायत्री बिष्ट 129; इसी तरह आरू खिलता है.../विवश बस्ती 134; इस्पात से बने लोग/रोहित दहाल 138; दलित का दरवाजा/रणेन्द्र बराली 142; ललिया गाय/पुण्य प्रसाद खरेल 146; द्रौपदी नियति/विजय चालिसे 151; आमने-सामने/प्रदीप ज्ञवाली 156; वधशाला में तपस्वी/पुण्य कार्की 159; मृत्यु : कल, आज और कल/आन्विका गिरी 162.

साक्षात्कार
'दलित सौंदर्य शास्त्र को समाजवादी सौंदर्य शास्त्र के प्रवर्ग के रूप में देखा जाना चाहिए' (कवि और चिंतक आहुति से बातचीत) 214; 'राष्ट्रवाद की अवधारणा जन्मजात नस्लवादी है' (युग पाठक से बातचीत) 219.

एकांकी
वो मरे नहीं हैं/खेम थपलिया 168.

संस्मरण
मेरे ऊपर घास और घास के ऊपर शाही सेना/अजय शक्ति 182.

निबंध
समकालीन प्रगतिवादी नेपाली साहित्यः संक्षिप्त चर्चा/अमर गिरि 186; नेपाल में मार्क्सवादी सौंदर्य चिंतन/चैतन्य 193.

घटनाक्रम
नेपालः इतिहास के झरोखे से : 227

किताबों की दुनिया
सेतु प्रकाशन/द्वितीय आवरण; प्रकाशन संस्थान/ तीसरा आवरण; गार्गी प्रकाशन/ चौथा आवरण।
समकालीन मचान/80; सेतु प्रकाशन/90,104,181,229; तीसरी दुनिया प्रकाशन/96; ग्रंथ शिल्पी 161, 213; गार्गी प्रकाशन/141, 230; नित्यानंद गायेन की पुस्तकें/166; फारवर्ड प्रेस/226; जनचेतना/232; प्रकाशन संस्थान/234; ऑथर्स प्राइड/236; शीला सिद्धांतकर और शिवमंगल सिद्धांतकर की पुस्तकें/237; अगोरा प्रकाशन/121, 125, 238;

दो शब्द

एक लंबे इंतजार के बाद हम यह विशेषांक प्रस्तुत कर सके हैं। नेपाली साहित्य से हिंदी पाठकों को परिचित कराने की दिशा में यह पहला संगठित प्रयास है। इस प्रयास को सफल बनाने में नेपाल के साथियों ने काफी मदद पहुंचायी।

इस अवसर पर दिवंगत कृष्णलाल अधिकारी को स्मरण करना प्रासंगिक लगता है जिन्हें साहित्यकार के रूप में प्रथम शहीद का सम्मान प्राप्त है। उनका जन्म संभवत: सन 1887 में नेपाल के रामेछाप जिला में हुआ था। वह एक सरकारी अधिकारी थे। उन्हें सुब्बा कृष्ण लाल के नाम से जाना जाता था। अपने कार्य की बदौलत उन्हें जल्दी ही 'सुब्बा' (अधिकारी) का ओहदा प्राप्त हो गया। 1920 में उन्होंने 'मकैको खेती' (मकई की खेती) नाम से एक पुस्तक लिखी जिसका उद्देश्य किसानों को कुछ वैज्ञानिक जानकारियों से लैस करना था। नेपाल में उन दिनों राणाओं का शासन था और वहां के कानून के मुताबिक सरकार की अनुमति के बिना किसी को कुछ भी प्रकाशित कराने की इजाजत नहीं थी। लेखकों को अपनी पांडुलिपि 'नेपाली भाषा प्रकाशिनी समिति' में जमा करनी होती थी जहां उचित छानबीन के बाद उपयुक्त समझे जाने पर ही प्रकाशन की स्वीकृति दी जाती थी। बताया जाता है कि कृष्णलाल अधिकारी ने भी 'मकैको खेती' की पांडुलिपि सरकार के पास जमा की थी और सरकारी स्वीकृति मिलने के बाद ही उसकी एक हजार प्रतियां छपवायी थीं। यह पुस्तक अभी छापाखाना से बाहर आयी भी नहीं थी कि राणा शासकों को किसी ने खबर दी कि पुस्तक में प्रतीकों के जरिये राणा शाही का विरोध किया गया है। अधिकारी ने मकई की फसल को बचाने के लिए ''लाल सिर वाले और काला सिर वाले कीड़ों'' का जिक्र किया था। उन्होंने ''देशी कुत्तों और विदेशी कुत्तों'' का हवाला देते हुए बताया था कि फसल की रक्षा के लिए किस तरह के कुत्ते उपयोगी होते हैं। एक स्थान पर कहा गया था कि ''1846 से ही दानवों ने प्रवेश कर लिया है।'' राणा प्रधानमंत्री चंद्र शमशेर के दरबारी पंडितों ने राणाओं को समझाया कि ये सभी संदर्भ संकेतों में राणा शासकों की ओर इंगित हैं। 'लाल सिर वाले कीड़ों' और 'विदेशी कुत्ते' के उल्लेख को चंद्र शमशेर ने अपने ऊपर लक्षित समझा क्योंकि वह कुछ ही दिन पहले इंग्लैण्ड से लौटे थे और लाल रंग की टोपी पहनते थे। भीम शमशेर ने माना कि 'काले सिर वाले कीड़ों' का संकेत उनके लिए है क्योंकि वह काली टोपी पहनते थे। इसी प्रकार उस पुस्तक में लिखा गया था कि ''विदेशी कुकुरहरूको धेरै मान गर्दछौं तर चोर र डाँकाहरूबाट हाम्रो रक्षा गर्ने बखत गद्दीमा सुत्ने विदेशी कुकुर काम नलागी स्वदेशी कुकुरहरू नै काम लाग्छन्' (हम लोग अपने देशी कुत्तों से अधिक विदेशी कुत्तों का सम्मान करते हैं पर चोर व डाकुओं से हमारी रक्षा करते समय गद्दी पर सोने वाले विदेशी कुत्ते काम में न आकर स्वदेशी कुत्ते ही काम आते हैं।) उनके इस वाक्य को भी राणाशाही के खिलाफ माना गया क्योंकि राणाओं का झुकाव अंग्रेजों की ओर बहुत ज्यादा था। स्मरणीय है कि 1857 में भारत के पहले स्वतंत्रता संग्राम के समय जंग बहादुर राणा की सरकार ने अंग्रेजों की मदद के लिए अपने यहां से गोरखा बटालियन भेजी थी। इसके अलावा अधिकारी की इस पुस्तक में नेपाली जनता की गरीबी और असहायता का भी मार्मिक चित्रण था।

राणा शासकों ने कृष्ण लाल अधिकारी को गिरफ्तार कर लिया और जेल में डाल दिया। अधिकारी से कहा गया कि वह सभी मुद्रित प्रतियां दरबार में पेश करें और तब उन्हें जो नौ वर्ष की सजा दी गयी है उसमें तीन साल की कटौती की जा सकती है। अधिकारी ने 999 प्रतियां प्रस्तुत कीं क्योंकि बहुत प्रयास करने पर भी एक प्रति नहीं मिली और उन्हें नौ साल तक बामशक्कत जेल में रहने की सजा दी गयी। गिरफ्तारी के तीन साल बाद ही वह क्षय रोग (टीबी) की चपेट में आ गये लेकिन राणाओं ने उन्हें रिहा नहीं किया। उनके पिता लक्ष्मण अधिकारी ने राणा शासकों से अनुरोध किया कि उन्हें रिहा कर दिया जाय क्योंकि वह मृत्युशैया पर पड़े हैं लेकिन जवाब में राणा चंद्र शमशेर ने यही कहा कि 'उसे जेल में ही सड़ने के लिए डाला गया है।' नौ साल की सजा पूरी होने से पहले ही जेल में उनकी मृत्यु हो गयी। कृष्णलाल अधिकारी के साथ ही ऐसे कई लोगों को